सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-9: व्यापारी, राजा और तीर्थयात्री

SHIVOM CLASSES 8696608541

व्यापारी

व्यापारी वह व्यक्ति कहलाता है जो व्यापार का कार्य करता है। ये शब्द अंग्रेजी में 'मर्चेंट' शब्द से जाना जाता है जिसे लैटिन शब्द "मारीरी" से लिया गया है जिसका अर्थ होता है यातायात।एक व्यापारी वह जो किसी अन्य के द्वारा उत्पादित सेवाओं और वस्तुओं का विक्रय करता है और बदले में अपना लाभ प्राप्त करता है, यह व्यापार के श्रेणी में आटा है जो वह देश या विदेश में करता है। एक व्यवसायी या Businessperson वह होता है जिसके पास स्वयं का व्यापार होता है जो अपनी स्वामित्व वाली कंपनी द्वारा सेवाएँ और वस्तुएं तैयार की जाती है उन्हें व्यापारियों को विक्रय करता है।

व्यापार

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

व्यापार (Trade) का अर्थ है क्रय और विक्रय। दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति (या संस्था) से दूसरे व्यक्ति (या संस्था) को सामानों का स्वामित्व अन्तरण ही व्यापार कहलाता है। स्वामित्व का अन्तरण सामान, सेवा या मुद्रा के बदले किया जाता है। जिस नेटवर्क (संरचना) में व्यापार किया जाता है उसे 'बाजार' कहते हैं।

व्यापार और व्यापारियों के बारे में जानकारी

व्यापार तथा वाणिज्य भारत के आर्थिक जीवन का प्रमुख तत्व रहा है । वस्तुतः यह यहाँ के निवासियों की समृद्धि का प्रधान कारण था । अत्यन्त प्राचीन काल से ही यहाँ के निवासियों ने व्यापार-वाणिज्य के क्षेत्र में गहरी दिलचस्पी दिखाई । राज्य की ओर से भी व्यापारियों को पर्याप्त प्रोत्साहन एवं संरक्षण प्रदान किया गया।

परिणामस्वरूप यहाँ का आन्तरिक एवं बाह्य दोनों, ही व्यापार विकसित हुआ । जहाँ विश्व के अन्य देशों के साथ भारत का सम्बन्ध सांस्कृतिक एवं राजनीतिक था, वहाँ पश्चिमी विश्व के साथ यह प्रधानतः व्यापार-परक था।

भारत के पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्धों की प्राचीनता प्रागैतिहासिक युग तक जाती है । ज्ञात होता है कि सिन्धु सभ्यता के निवासियों का मेसोपोटामिया की सुमेरियन सभ्यता के निवासियों के साथ घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध था।

उर, किश, लगश, निमुर, तेल अस्मर, टेपे, गावरा, हमा आटि मेसोपोटामियन नगरों से लगभग एक दर्जन सैन्धव मुहरें प्राप्त होती हैं

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

जो व्यापारिक प्रसंग में वहाँ पहुंचायी गयी थीं । मुहरों के अतिरिक्त सोने, चाँदी तथा ताँबे के आभूषण, करकेतन के मनके, मोती, हाथी दात के कच्चे, मिट्टी के विभिन्न प्रकार के वर्तन, लकड़ी की वस्तुयें आदि भी मेसोपोटामियन नगरों से मिलती है।

ये वहाँ की वाजारों में विक्री के निमित्त व्यापारियों द्वारा ले जाई जाती थीं तथा वहाँ सं मिस, अनातोलिया, कीट आदि देशों को जाती थीं । चेहरीन द्वीप की खुदाई में मिले सैन्धव सभ्यता के कुछ अवशेषों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यहाँ के व्यापारी सिन्धु तथा मेसोपोटामिया के व्यापारियों के मध्य बिचौलियों का काम किया करते थे ।

दूसरी और सुमेरियन उत्पत्ति की अनेक वस्तुयें जैसे सफेद सगमरमर की मुहर, रेखित कार्लेनियन एका, हथौड़ा, भेड का खिलौना, मिटटी की मुहरें आदि सिन्धु घाटी के विभित्र स्थलों से भी प्राप्त होती है । मोहेनजोदड़ो से सुमेरियन मुहर प्राप्त होती है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

लोथल उस काल का प्रसिद्ध समुद्री बन्दरगाह था, जैसाकि वहाँ से प्राप्त गोदीबाड़ा से स्पष्ट होता है । वैदिक युग में भी पश्चिमी जगत के साथ व्यापारिक सम्बन्ध चलता रहा। भारत के व्यापारी फारस की खाड़ी तक जाते थे तथा वहाँ वस्तुओं का क्रय-विक्रय किया करते थे।इस काल में सिन्धु प्रदेश में उत्तम कोटि के वस्त्रों का निर्माण होता था।

ऋग्वेद से सूचित होता है कि सिन्धु प्रदेश के पानीदार घोड़े, शक्तिशाली रथ तथा ऊनी वस्त्र पूरे विश्व में प्रसिद्ध थे । इसी प्रकार गन्धार प्रदेश चिकने तथा सुन्दर ऊन के लिये प्रसिद्ध था । ऊनी वस्त्र, हाथी-दांत की वस्तुयें, रत्न तथा – द्रव्य भारत से पश्चिमी देशों को भेजे जाते थे । ये वस्तुयें वहाँ काफी लोकप्रिय थी।

बौद्ध साहित्य से पता चलता है कि भारत तथा पश्चिमी देशों के बीच घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध था । पश्चिमी भारत में इस समय सोपारा तथा भूगुकच्छ प्रसिद्ध वन्दरगाह थे जहाँ विभिन्न देशों के व्यापारी अपनी जहाजों में माल भरकर लाते तथा ले जाते थे।

वाबेरू जातक से पता चलता है कि भारतीय व्यापारी वेवीलोन में कौवे तथा मोर की विक्री करते थे । जातक ग्रन्थों में कई स्थानों पर व्यापारियों द्वारा समुद्री यात्रा करने तथा कभी-कभी जहाजों के दुर्घटनाग्रस्त होने के उल्लेख है।

दक्षिण भारत सोना, मसाले, काली मिर्च तथा कीमती पत्थरों के लिए प्रसिद्ध था। काली मिर्च की रोमन साम्राज्य में इतनी माँग थी की ऐसे ' काले सोने ' के नाम से बुलाते थे। व्यापारी इन सामानों को समुद्री जहाज़ों और सड़को के रस्ते रोम पहुँचाते थे।

दक्षिण भारत में ऐसे अनेक रोमन सोने के सिक्के मिले। रोम में व्यापर चल रहा था। व्यापारियों ने कई समुद्री रास्ते खोज निकाले। इनमें से कुछ समुद्र के किनारे चलते कुछ अरब सागर और बंगाल की खाड़ी पार करते थे।अफ्रीका या अरब के पूर्वी तट से इस उपमहाद्वीप के पश्चिमी तट पर पहुँचना चाहते थे तो दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के साथ चलना पसंद करते थे।

समुद्र तटों से लगे राज्य

इस उपमहाद्वीप के दक्षिणी भाग में बड़ा तटीय प्रदेश है। इनमें बहुत-से पहाड़, पठार और नदी के मैदान हैं। नदियों के मैदानी इलाकों में कावेरी का मैदान सबसे उपजाऊ है। राज्य उस संगठित

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

इकाई को कहते हैं जो एक शासन के अधीन हो। राज्य संप्रभुतासम्पन्न हो सकते हैं। इसके अलावा किसी शासकीय इकाई या उसके किसी प्रभाग को भी 'राज्य' कहते हैं, जैसे भारत के प्रदेशों को भी 'राज्य' कहते हैं। राज्य आधुनिक विश्व की अनिवार्य सच्चाई है। दुनिया के अधिकांश लोग किसी-न-किसी राज्य के नागरिक हैं।

संगम मुवेन्दार तमिल शब्द जिसका अर्थ तीन मुखिया –चोल, चेर, तथा पाण्ड्य जो करीब 2300 साल पहले दक्षिण भारत में काफी शक्तिशाली माने जाते थे। इन सबके दो-दो सत्ता केंद्र थे। इनमें से एक तटीय हिस्से में और दूसरा अंदरूनी हिस्से में था।

इस तरह छह केंद्रों में से दो बहुत महत्वपूर्ण थे। एक चोलो का पत्तन पुहार या कवेरीपट्टीनम, दूसरा पांडयों की राजधानी मदुरै। ये मुखिया लोगों से नियमित क्रम के बजाय उपहारों की माँग करते थे। इसके लगभग 200 वर्षों के बाद पश्चिम भारत में सातवाहन नामक राजवंश का प्रभाव बढ़ गया। सातवाहनों का सबसे प्रमुख राजा गौतमी पुत्र श्री सातकर्णी था। उसके बारे में हमें उसकी माँ, गौतमी बलश्री द्वारा दान किये गए अभिलेख से पता चलता है।

भारत के कुछ समुद्री तट

भारत सांस्कृतिक और भौगोलिक रुप से एक संपन्न देश है। यहां की संस्कृति, सभ्यता इसे एक आदर्श देश बनाती है लेकिन वहीं भारत की भौगोलिक स्थिति इसे अन्य देशो से समृद्ध बनाती है। भारत भोगिलक दृष्टि से एक संपन्न देश है यहां विशाल प्राचीन पहाड़ एवं पर्वत हैं, तो वहीं रेगिस्तान भी है। यहां हरे-भरे जंगल और जीव-जन्तु हैं तो वहीं नदियों और झीलों की सुंदरता है। लेकिन इसके साथ ही भारत एक प्रायद्वीप भी है जो तीनों और से विशाल, सुंदर समुद्रों से घिरा हुआ हैं।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

भारत की सुंदरता में चार चांद लगाते यह समुद्री तट किसी का भी मन मोह लेने का दम रखते हैं। भारत की सुंदरता और विशालता के गवाह ये समुद्री तट हैं जो नीले समुद्र के सामने सुनहरी चमकती रेत पर बलखाती लहरो के साथ एक अनुपम दृश्य प्रदान करते हैं। समुद्र तटों से उगते और डूबते सूर्य का अद्भुद नजारा केवल भारत मे ही आपको देखने को मिलता है। भारत के समुद्री तट भारत का गौरव भी है जहां प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में सैलानी आते हैं और इन समुद्री तटों की खूबसूरती में खो जाते हैं। भारत के यह समुद्री तट भारत की गरिमामय प्रस्तुति करते हैं।

भारत तीन तरफ से समुद्र से घिरा विशाल प्रायद्वीप है और इसका समुद्र तट लम्बा है जो 7500 किलोमीटर से अधिक फैला हुआ है। भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहां समुद्र की हजारों किलोमीटर की तट रेखा है। यहां पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिन्दम महासागर है।

भारत के शीर्ष समुद्री तट

भारत में बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर से पूर्व में दक्षिण से पश्चिम तक 7,000 किमी से अधिक की दूरी पर फैली एक आश्चर्यजनक तट रेखा है। यह अद्भुद तटरेखा कुछ शानदार प्राकृतिक सौन्द्रय को स्वंय में समाहित किए हुए हैं। ये समुद्र तट आपको अपने अनोखे और खूबसूरत फूलों और जीवों के साथ उत्साही समुद्र-दुनिया का पता लगाने की एक शानदार यात्रा देते हैं। भारत में समुद्र तटों में से कुछ ऐसे हैं जिन्हें जीवन में कम से कम एक बार अवश्य देखना चाहेंगें। सनुहरी रेत, बलखाती लहरें, हरे भरे पेड़-पौंधे और विशाल समुद्र आपका इंतजार कर रहा है तो आइए जानते है भारत के इन्हीं सुंदर समुद्री तटों के बारे में-

केरल में कोवलम समुद्री तट

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

केरल में स्थित कोवलम समुद्री तट चेन्नई से 40 किलोमिटर दूर महाबलीपुरम के रास्ते पर एक गाँव है जो कोवेलोंग नाम से जाना जाता है। मालाबार तट के साथ चल रहे कोवलम तट में सफेद रेतीले समुद्र तट का लंबा हिस्सा है और यह केरल के सबसे लोकप्रिय समुद्री समुद्र तटों में से एक है। तिरुवनंतपुरम से 16 किमी की दूरी पर स्थित कोवलम में वास्तव में चट्टानी परिदृश्य से अलग 3 समुद्र तट हैं। लाइटहाउस तट, हावा तट और समुद्र तट जो कोवलम को समुद्री तट का केन्द्र बनाते हैं। इस तट पर आयुर्वेदिक मालिश केंद्र, लकड़ी से बने बेड़े की सवारी और ख़रीददारी करने के लिए दुकानें भी बनाई गई हैं। यहां का शांत पानी तैराकी के लिए आदर्श माना जाता है। यहां जाने का सबसे अच्छा समय सितंबर से मार्च तक माना जाता है।

केरल में वर्कला समुद्री तट

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

एलेप्पी और कोवलम के तट स्थित, वर्कला भारत के प्रमुख समुद्र तटों में से एक है। यहां की फोटोग्राफी का आदर्श स्थल चट्टान की घुमावदार खिंचाव और सूरज की सुंदरता आपकी सांसें थाम देगी। यह तिरुवनंतपुरम से 50 जबकि कोल्लम से 37 किलोमीटर की दूरी पर है। वरकला अपने कई आयुर्वेदिक मसाज और थेरपी केन्द्रों के कारण तेजी से एक लोकप्रिय आरोग्य केंद्र के रूप में प्रसिद्ध हो रहा है। इसकी सहायता से यहां आप अपनी कई दिनों की थकान को भी दूर कर सकते हैं।

गोवा में पालोलेम समुद्री तट

यदि आप डॉल्फ़िन की खोज रहे हैं, तो गोवा का पालोलेम तट भारत के सबसे अच्छे स्थानों में से एक है जहां आपकी डॉल्फिन को देखने की इच्छा पूर्ण हो सकती है। यह समुद्री किनारा दक्षिणी

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

गोवा में स्थित है। यह राजधानी पणजी से 76 किलोमीटर दूर है। इस तट के किनारों पर नारियल के पेड़ लगे हैं जो दुनिया के भर के पर्यटकों को अपनी और आकर्षित करते हैं। पालोलेम तट मारमा गोवा से 37 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसको स्व र्ग के समान तट कहा जाता है और यह लगभग 1 मील लंबा तट है। इस स्थान पर अर्ध चंद्र के आकार में सफ़ेद रेत फैली हुई है। गोवा का यह सबसे खूबसूरत और सुरम्य समुद्र तट, पालोलेम तट नारियल के हथेलियों के मोटे जंगल से ढका हुआ है।

उत्तरी गोवा में बागा समुद्री तट

बागा तट सबसे लोकप्रिय है और आमतौर पर भीड़-भाड़ वाला तट है। बागा तट उत्तरी गोवा में स्थित है। यह गोवा की राजधानी पणजी से 16 किलोमीटर दूर है। लोग यहां सभी तरह के पानी के खेल का आनंद लेते हैं - पैरासेलिंग और विंडसर्फिंग, स्कूबा डाइविंग इत्यादि। बागा तट अपनी भूरी रेत और पाम के पेड़ों से पर्यटकों को आकर्षित करता है जो पानी के किनारे काफ़ी नज़दीक आ जाते हैं।

इसके साथ ही यह कई लोगो के लिए सूरज के नीचे रेत के बिस्तर पर लेट सूर्य की किरणो का आनंद लेने का स्थल इस तट को मछली पकड़ने, धूप में लेटने और पैडल बोट के लिए आदर्श तट माना जाता है। इतना ही नहीं बागा तट पार्टी, नाइटलाइफ और सी फूड के लिए जाना जाता है। इसके पास अच्छे रेस्टॉरेंट और होटल हैं। यह तट अपनी भूरी रेत और पाम पेड़ों से पर्यटकों को आकर्षित करता है।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उत्तर गोवा में कैलंगूट समुद्री तट

बागा तट से कुछ किलोमीटर की दूरी पर, कैलंगूट तट है, जो कि अभी तक एक और शीर्ष समुद्री तट है। जहां अमूमन भीड़ बनी रहती है। खासकर गोवा कार्निवल के समय यहां अच्छी संख्या में पर्यटक आते हैं। इसके साथ ही यह डॉल्फिन के लिए भी जाना जाता है। यहां कई तरह के जल क्रीड़ा भी आयोजित किए जाते हैं। गोवा के कैलंगूट तट को समुद्र तटों की रानी के रूप में जाना जाता है।

ओडिशा में पुरी तट

यह समुद्र तट पुरी मंदिर यानि भगवान जगन्नाथ मंदिर के बहुत करीब है। भगवान जगन्नाथ लोगों के तट बहुत सम्मानित और आस्था के केन्द्र है जउन्हें हिन्दू धर्म अनुसार चार धामों में से एक माना जाता है जिसके कारण पुरी का तट एक धार्मिक महत्व भी रखता है। कई भक्तों का मानना है कि सांसारिक मोह त्यागने से पहले यहां डूबकी लगाना बहुत आवश्यक है। तीर्थयात्री समुद्र में स्नान

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

करने के लिए आते हैं। पुरी तट पर सूर्यास्त के समय का नजारा बहुत आकर्षक होता है। भगवान जगन्नाथ की यात्रा के दौरान इस तट पर बहुत भीड़ होती है।

अंडमान द्वीप समूह में राधानगर तट

टाइम्स पत्रिका द्वारा अंडमान में हैवेलॉक द्वीप के इस छिपे हुए और निर्विवाद समुद्र तट को एशिया के सबसे खूबसूरत समुद्र तटों के रूप में अव्वल स्थान दिया गया था। यह समुद्री किनारा अंडमान निकोबार में स्थित है। यहां हर मौसम में जाया जा सकता है। इसके सफेद रेत है और नीले पानी सिर्फ एक दृष्टि में सभी दिल जीत जाते हैं। सुरक्षा कारणों की वजह से यहां पानी के खेलों की अनुमति नही गई है। किन्तु फिर भी आप इसकी लहरो के साथ खेल सकते हैं। यह समुद्री तट बहुत साफ है। राधानगर तट के पवित्र, अछूते तट अत्यंत सुंदर हैं और सभी प्रकृति प्रेमियों एवं उत्साही व्यक्तियों के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। राधानगर तट पर उजली रेत, लम्बे पेड़ और सामने से लगातार आती समुद्र की लहरें ऐसा सम्मिश्रण बनाते हैं कि आप उसमें डूबे बिना नहीं रह सकते। राधानगर तट पर कैम्पिंग सुविधा भी उपलब्ध है। यह एक आदर्श अवकाश स्थल हैं।

गोवा में कैंडोलिम तट

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

इस समुद्र तट में समुद्र तट-प्रेमियों के लिए सब कुछ है - सफेद रेत, क्रिस्टल पानी, रोमांचकारियों के लिए पानी के खेल ध्यान और योग के लिए शांतिपूर्ण माहौल; सभी खाद्य पदार्थों के लिए सीफ़ूड सहित सुन्दर भोजन, एक चर्च, हर पर्यटक के लिए एक लाइटहाउस, होटल, रेस्तरां और सुंदर दृश्य यहां सब कुछ आपको मिलेगा। कैंडोलिम तट उत्तरी गोवा में स्थित है। कैंडोलिम पणजी से 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह तट गोवा के सबसे लंबे बीचों में से एक है। कैंडोलिम इलाका गोवा के सबसे प्रसिद्ध तट कैलंगूट तट के पास स्थित है। कैंडोलिम तट शांतिपूर्ण वातावरण के लिए जाना जाता है। कैलंगूट तट का हर चीज से संपन्न होना ही इसे अपने आप में खास और पर्यटकों की पहली पंसद बनाता है।

रेशम मार्ग की कहानी

रेशम मार्ग प्राचीनकाल और मध्यकाल में ऐतिहासिक व्यापारिक-सांस्कृतिक मार्गों का एक समूह था जिसके माध्यम से एशिया, यूरोप और अफ्रीका जुड़े हुए थे। इसका सबसे जाना-माना हिस्सा उत्तरी रेशम मार्ग है जो चीन से होकर पश्चिम की ओर पहले मध्य एशिया में और फिर यूरोप में जाता

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

था और जिस से निकलती एक शाखा भारत की ओर जाती थी। रेशम मार्ग का जमीनी हिस्सा ६,५०० किमी लम्बा था और इसका नाम चीन के रेशम के नाम पर पड़ा जिसका व्यापार इस मार्ग की मुख्य विशेषता थी। इसके माध्यम मध्य एशिया, यूरोप, भारत और ईरान में चीन के हान राजवंश काल में पहुँचना शुरू हुआ। कीमती, चमकीले रंग, और चिकनी, मुलायम बनावट की वजह से रेशमी कपड़े अधकांश समाज में बहुमूल्य मने जाते हैं। रेशमी कपड़ा तैयार करना एक जटिल प्रक्रिया है। रेशम के कीड़े से कच्चा रेशम निकालकर, सूत कताई, और फिर उससे कपड़ा बना जाता है। रेशम बनाने की तकनीक का अविष्कार सबसे पहले चीन में करीब 7000 साल पहले हुआ।

इस तकनीक को उन्होंने हज़ारों साल तक बाकी दुनिया से छुपाए रखा। चीनी यात्री जिस रास्ते से यात्रा करते थे वह रेशम मार्ग (सिल्क रुट) के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

चीनी शासक ईरान और पश्चिमी एशिया के शासको को उपहार के तौर पर रेशमी कपड़े भेजते थे। 2000 साल पहले रोम के शासको और धनी लोगों के बिच रेशमी कपड़े पहनना एक फ़ैशन बन गया। सिल्क रूट पर नियंत्रण रखने वाले शासकों में कुषाण थे।

कुषाणों का सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क था। उसने करीब 1900 साल पहले शासन किया।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उसने एक बौद्ध परिषद का गठन किया, जिसमें एकत्र होकर विद्वान महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श करते थे। बुद्ध की जीवनी बुद्धचरित्र के रचनाकार कवि अश्वघोष, कनिष्क के दरबार में रहते थे अश्वघोष तथा अन्य बौद्ध विद्वानों ने अब संस्कृत में लिखना शुरू कर दिया था।

बौद्ध धर्म का प्रचार

बौद्ध साहित्य के अनुसार कनिष्क अशोक के बाद दूसरा महान बौद्ध सम्राट हुआ है. उसने बौद्ध धर्म को अपनाने के बाद अपने सिक्कों पर महात्मा बुद्ध की मूर्ति को प्रधानता दी. कनिष्क भी अशोक तथा हर्ष की तरह उदार धार्मिक दृष्टिकोण रखता था. उसने बौद्ध धर्म के प्रचार तथा प्रसार के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाये –

बौद्ध धर्म को राज्याश्रय देना

कनिष्क ने बौद्ध धर्म को संरक्षण देकर इसके प्रचार में रुपये खर्च किये. उसने विहार, स्तूप तथा मठ बनवाये जहाँ पर बौद्ध भिक्षु रह सकते थे या शिक्षा एवं धर्म प्रसार का कार्य कर सकते थे.

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

प्रचारक भेजे

कनिष्क ने मध्य एशिया, चीन, जापान तथा तिब्बत में बौद्ध भिक्षुओं को भेजा तथा बौद्ध धर्म का विदेशों में प्रचार किया.

इमारतें तथा विद्वानों को संरक्षण

उसने बौद्ध मंदिर, मठ, स्तूप एवं बुद्ध की कई मूर्तियाँ भी बनवायीं. उसके काल में अश्वघोष ने 'बुद्धचरितम' नामक ग्रन्थ लिखा जिसमें बुद्ध की जीवनी का सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है.

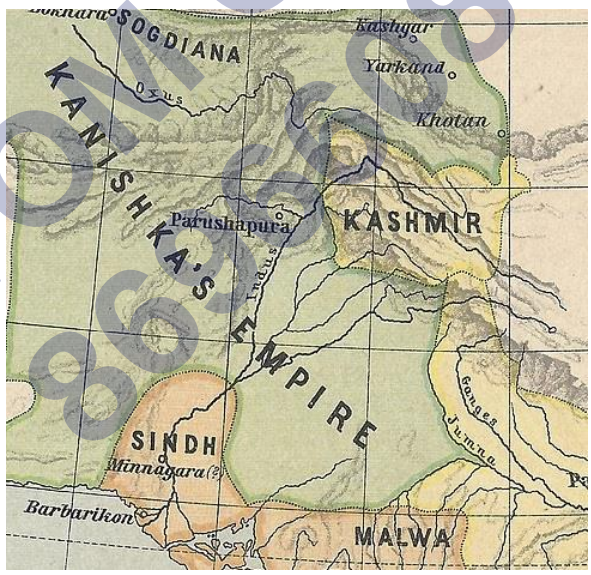

चतुर्थ संगीति का आयोजन

कनिष्क ने तत्कालीन बौद्ध विद्वान पार्श्व के अनुरोध पर कश्मीर के कुण्डल वन में चौथी सभा बुलायी. इस बौद्ध सभा के उद्देश्य थे :

- बौद्धों में प्रचलित मतभेद को दूर करना तथा
- सभी बौद्ध पुस्तकों को संग्रहित करना

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

तिब्बत के यात्री तारानाथ के अनुसार, बौद्धों में प्रचलित 18 मतभेद इसी सभा के कारण दूर हुए तथा अधिकांश टीकाओं को तीन पिटकों (ग्रन्थों) में इकट्ठा कर दिया गया.

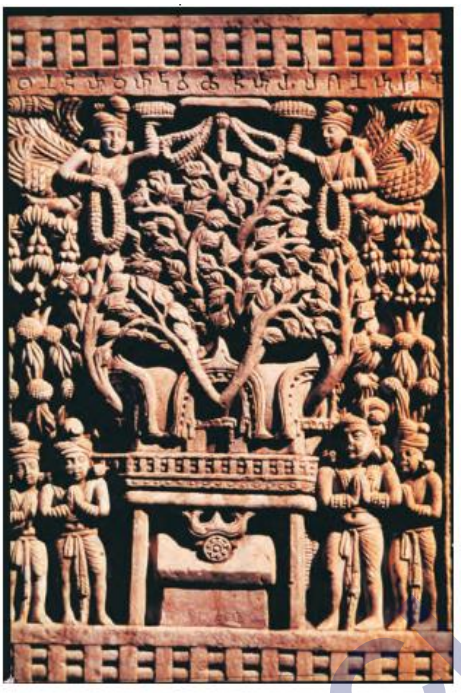

साँची के स्तूप का एक मूर्ति चित्र। यहाँ इस वृक्ष और उसके नीचे के खाली आसन को देखो। मूर्तिकारों ने यह बताने के लिए खुदाई करके यह मूर्ति बनाई कि बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति इसी वृक्ष के नीचे बैठ कर ध्यान करते हुए हुई।

बौद्ध धर्म में महायान का विकास

महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद बौद्ध धर्म दो पंथों में बंट गया यानी हीनयान और महायान। जहां हीनयान बुद्ध की मूल शिक्षा का अनुसरण करते या मानते हैं वहीं महायान मूर्ति पूजा में विश्वास रखते हैं। यह आत्म,अनुशासन और ध्यान के माध्यम से व्यक्तिगत मुक्ति पर जोर देते हैं। महायान संप्रदाय भारत से चीन, कोरिया, जापान, ताइवान, नेपाल, तिब्बत, भूटान और मंगोलिया जैसे कई अन्य देशों में फैल गया। महायान मंत्रों में विश्वास करते हैं। इसके मुख्य सिद्धांत सभी प्राणियों के लिए दुख से सार्वभौमिक मुक्ति की संभावना पर आधारित थे। इसलिए, इस संप्रदाय को महायान (महान वाहन) कहा जाता है। महायान विश्वास रखने और स्वयं को बुद्ध के प्रति समर्पित करने के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति के विषय में बात करते हैं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

पहला मूर्तियों में बुद्ध की उपस्थिति, निर्वाण प्राप्ति को पेड़ की मूर्ति द्वारा दर्शाया जाता था, बुद्ध की प्रतिमाएँ। मथुरा और तक्षशिला में बनाई जाने लगीं। दूसरा परिवर्तन बोधिसत्व में आस्था को लेकर आया बोधिसत्व -जो ज्ञान प्राप्ति के बाद एकांत वास करते हुए ध्यान साधना कर सकते थे।

लेकिन वे लोगो को शिक्षा देने और मदद करने के लिए सांसारिक परिवेश में ही रहना ठीक समझने लगे।बौद्ध धर्म पुरे मध्य एशिया, चीन, कोरिया, जापान तक फैल गई। दक्षिण-पूर्व की ओर श्रीलंका, म्यांमार, थाइलैंड, इंडोनेशिया तक फ़ैल गया।

तीर्थयात्री

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

तीर्थयात्री

तीर्थयात्री वे स्त्री-पुरुष होते हैं, जो प्रार्थना के लिए पवित्र स्थानों की यात्रा किया करते हैं।

विदेशी यात्री

1. चीन से ह्वेन सांग (630-645 ईस्वी)

ह्वेन त्सांग बौद्ध के विश्वास और प्रथाओं की तलाश में चीन से आने वाले भारत के पहले और सबसे प्रसिद्ध आगंतुकों में से एक थे। ह्वेन त्सांग को "तीर्थयात्रियों के राजकुमार" के रूप में जाना जाता था, उनको भारत के राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिदृश्य के बारे में बहुत अच्छे से पता है । उन्होंने कश्मीर, पंजाब, कपिलवस्तु, बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर की यात्रा की, नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया और दक्कन, उड़ीसा और बंगाल की यात्रा करने का फैसला किया। उनके वृत्तांत दर्शाते हैं कि प्राचीन भारत कैसा रहा होगा।

2. डिमाकस (320-273 ईसा पूर्व)

बिन्दुसार के शासनकाल के दौरान, डिमाकस ने भारत की यात्रा की। सीरिया के राजा एंटिओकस-। राजदूत डिमाकस को बिन्दुसार के दरबार में लाया गया। मेगस्थनीज की जगह डिमाकस ने ले ली। ग्रीक इतिहासकारों मेगस्थनीज, डिमाकस और डायोनिसियस ने मौर्य दरबार में राजनयिकों के रूप में कार्य किया। उन्हें आधुनिक समाज और राजनीति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी थी।

3. टॉलेमी (130 ईस्वी)

•ग्रीस से

•भूगोलवेत्ता

•इन्होने "भारत का भूगोल" लिखा था,, जो प्राचीन भारतीय भूगोल का वर्णन करता है।

4. ग्रीस से मेगस्थनीज (302-298 ईसा पूर्व)

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

मेगस्थनीज (c. 350 BC—c. 290 BC) एक प्राचीन यूनानी इतिहासकार और राजनयिक थे, जिन्होंने इंडिका, भारत चार-खंड का क्रॉनिकल इतिहास लिखा था। वह हेलेनिस्टिक सम्राट सेल्यूकस प्रथम द्वारा मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त के राज्य में राजनयिक मिशन पर भेजा गया एक आयोनियन था । उन्होंने चंद्रगुप्त मौर्य के महल (302-298 ईसा पूर्व) में लगभग पांच साल बिताए। उन्होंने उस समय ग्रीक दुनिया के लिए भारत का सबसे व्यापक विवरण प्रदान किया, और उन्होंने बाद के इतिहासकारों जैसे डियोडोरस, स्ट्रैबो, प्लिनी और एरियन के लिए एक स्रोत के रूप में कार्य किया। मेगस्थनीज की पुस्तक में खामियां थीं, जिनमें तथ्यात्मक त्रुटियां, भारतीय पौराणिक कथाओं का निर्विवाद आलिंगन और ग्रीक दार्शनिक मानदंडों के अनुसार भारतीय समाज को आदर्श बनाने की इच्छा शामिल थी। उन्होंने भारत में जो कुछ भी देखा, हम उन्ही की भूगोल, शासन, धर्म और समाज सहित उनकी रिपोर्टों से ही सीखते है।

भक्ति की शुरुआत

देवी-देवताओं की पूजा का चलन शुरू हुआ जिससे हिन्दू धर्म की प्रमुख पहचान बन गयी। इनमें शिव, विष्णु और दुर्गा जैसे देवी-देवता शामिल हैं। भक्ति मार्ग की चर्चा हिन्दुओं के पवित्र गंन्थ ' भगवदगीता ' में की गई है। मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति आन्दोलनों की एक खास भूमिका है.

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

सामाजिक-धार्मिक सुधारकों ने इस काल में समाज विभिन्न तरह से भगवान की भक्ति का प्रचार-प्रसार किया. नारद, अलवर, नयनार, आदि शंकराचार्य, कुछ प्रमुख संत थे.

नारद

नयनार

नालंदा विश्वविद्यालय

नालंदा अपने प्राचीन इतिहास के लिये विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ विश्व के सबसे पुराने नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष आज भी मौज़ूद है, जहाँ सुदूर देशों से छात्र अध्ययन के लिये भारत आते थे। बुद्ध और महावीर कइ बार नालन्दा मे ठहरे थे। माना जाता है कि महावीर ने मोक्ष की प्राप्ति पावापुरी मे की थी, जो नालन्दा मे स्थित है।

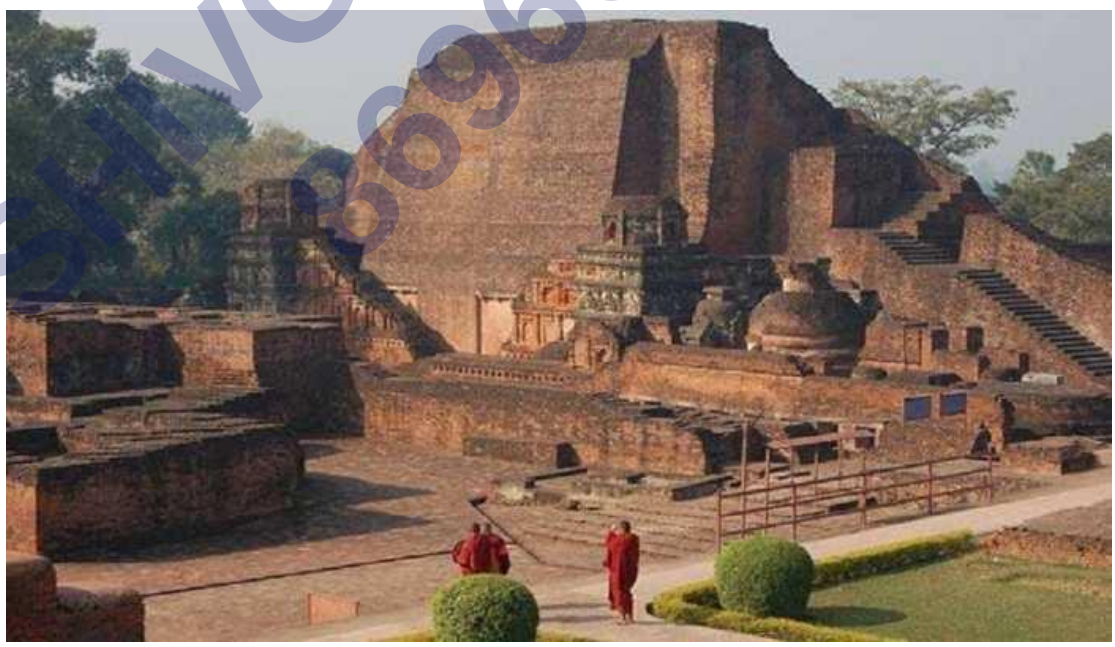

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 101)

प्रश्न 1 निम्नलिखित के उपयुक्त जोड़े बनाओ।

कॉलम I	कॉलम II
(a) दक्षिणापथ के स्वामी	(1) बुद्धचरित
(b) मुवेंदार	(2) महायान बौद्ध् धर्म
(c) अश्वघोष	(3) सातवाहन शासक
(d) बोधिसत्व	(4) चीनी यात्री
(e) श्वैन त्सांग	(5) चोल, चेर, पांड्य

उत्तर –

कॉलम I	कॉलम II
(a) दक्षिणापथ के स्वामी	(1) सातवाहन शासक
(b) मुवेंदार	(2) चोल, चेर, पांड्य
(c) अश्वघोष	(3) बुद्धचरित
(d) बोधिसत्व	(4) महायान बौद्ध् धर्म
(e) श्वैन त्सांग	(5) चीनी यात्री

SHIVOM CLASSES 8696608541

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 102)

प्रश्न 2 राजा सिल्क रूट पर अपना नियंत्रण क्यों कायम करना चाहते थे?

उत्तर – राजा सिल्क रूट से गुजरने वाले व्यापारियों को आस पास के लोगों के द्वारा यात्रा शुल्क वसूलने और लुटेरों के आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करते थे। इससे निश्चिंत होकर व्यपारी सिल्क रूट से सामान लाने और ले जाने लगे। इससे व्यपार में मुनाफा भी बढ़ा। इन सुविधाओं के बदले व्यपारी

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

इन शासकों को कर शुल्क और तोहफे देते थे। इन अर्थिक लाभ के कारण कुछ शासक सिल्क रूट के बड़े बड़े हिस्सों पर अपना नियंत्रण कायम करना चाहते थे।

प्रश्न 3 व्यापार और व्यापारियों के रास्ते के बारे में जानने के लिए इतिहासकार किन किन साक्ष्यों का उपयोग करते हैं?

उत्तर – इतिहासकार व्यापार और व्यापारिक रास्ते के बारे में जानने के लिए विभिन्न साक्ष्यों का उपयोग करते हैं। वे तीर्थयात्री द्वारा लिखित किताबों का अध्ययन कर व्यापारिक रास्ते को जानने की कोशिश करते हैं। अगर कोई सामान बहुत दूर देश से लाया गया है तो इससे पता चलता है कि विश्व के दूसरे देशों के साथ भी यहाँ के व्यापारिक सम्बन्ध थे। जैसे रोम में यहाँ से मसाले और सोने पहुँचाए जाते थे। साथ ही इतिहासकार उस समय के प्रचलन में मिले सिक्कों से भी व्यापार का पता लगाते हैं।

प्रश्न 4 भक्ति की प्रमुख विशेषताएँ क्या थी?

उत्तर – भक्ति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है।

- इसमें देवी देवताओ की पूजा की जाती थी।
- इसमें सभी जाति, धर्म और वर्ग के लिए द्वार खुले थे।
- इसको अपनाने वाले लोग आडंबर को छोड़ कर ईश्वर के प्रति लगन और व्यक्तिगत पूजा पर जोर देते थे।
- इसमें अराध्य देवी देवताओं की पूजा मानव के रूप के अलावा और किसी भी रूप की जा सकती थी।

प्रश्न 5 चीनी तीर्थयात्री भारत क्यों आए। कारण बताओ।

उत्तर – व्यापारियों के साथ कुछ तीर्थयात्री भी यहाँ आते थे। उनमें से कुछ तीर्थयात्री चीन से यहाँ आए थे। वे सब बुद्ध के जीवन से जुड़ी जगहों और प्रसिद्ध मठों को देखने यहाँ आए थे।

प्रश्न 6 साधारण लोगों का भक्ति के प्रति आकर्षित होने का कौन सा कारण होता है?

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उत्तर – भक्ति के अंतर्गत कोई भी व्यक्ति अपने मन मुताबिक किसी भी देवी देवताओं को चुन सकता है। अब देवी देवताओं की पूजा किसी भी रूप में अपने तरीके से करने की आजादी थी। अब धर्म पर से ब्राह्मणों का वर्चस्व खत्म हो चुका था। अब आडंबर और कुरीतियों का भी कोई स्थान नहीं था। ये सभी साधारण नियम साधारण लोगों को भक्ति के प्रति आकर्षित कर रहे थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)